## प्रश्नोरा अथवा नागरों के तर्क बेमानी :-

प्रश्नोरा नागर अथवा अन्य नागरों ने दशोरा जाति के विषय में जो तर्क दिये हैं वे सब बेमानी है। जातियों का निर्माण किस प्रकार हुआ तथा एक ही ब्राह्मण जाति विभिन्न छोटे–छोटे वर्गों में किस प्रकार विभाजित होती चली गई इसकी जानकारी इन्हें न होने से ये छोटे–मोटे तर्क देकर अपनी मान्यता की पुष्टि करते हैं जो तथ्यों पर आधारित नहीं है। जातियों का विभाजन आदि काल से चलता आ रहा है। कई जातियाँ एक दूसरे में मिल जाती हैं तथा कई व्यक्ति एक जाति से अलग होकर नई जाति बना लेते है किन्तु इससे इनका मूल जाति से सम्बन्ध विच्छेद नहीं हो जाता। उदाहरण के रुप में गुजरात में दो ही प्रमुख ब्राह्मण वर्ग थे जिनमें एक वर्ग 'सहस्त्र औदिच्य' कहलाता था तथा दूसरा वर्ग 'नागर जाति' का था। सहस्त्र औदिच्य के भी कई भेद हो गये जिनमें पालीवाल, नन्दवाना, सिरोहिया, आमेटा, गोरवाल, मेणारिया, पाणेरी आदि हैं। ये सभी औदिच्य वर्ग के हैं जिनका भी परस्पर भोजन व्यवहार व कन्या लेन देन का सम्बन्ध नहीं है किन्तु इसी से ये अपनी मूल जाति से भिन्न नहीं हो जाते। इसी प्रकार प्रश्नोरो के साथ दशोरों का कन्या लेन–देन व भोजन व्यवहार बन्द हो जाने मात्र से यह नहीं कहा जा सकता कि ये प्रश्नोरा नागर नहीं थे। यदि कन्या लेन देन व भोजन व्यवहार को ही जाति का स्वरूप माना जाता है तो आरंभ में बड़नगरा नागर ही एक मात्र जाति थी जिसका बाद में विभाजन होकर इसके छः अथवा दस भेद हुए जिनमें बाह्मा बरड़ा, अहमदाबादी तथा चित्तौड़ा भी थे जिनका कन्या लेन देन व भोजन व्यवहार इन बड़नगरों से बन्द हो गया। इसी प्रकार प्रश्नोरों का भी इनसे कन्या लेन देन व भोजन व्यवहार बन्द हो गया। फिर ये 'प्रश्नोरा' किस आधार पर अपने को 'नागर' कहते हैं? इसका उत्तर ये स्वयं दें।

9. दूसरा कारण है भिन्न–भिन्न स्थानों पर बसने के कारण दूरियों के कारण आचार–विचार में भेद आना स्वाभाविक है। इससे भी यह नहीं माना जा सकता कि ये भिन्न जाति के है।

10. नागरों का एक तर्क यह भी है कि "दशोरों के पास नागर जाति के होने का कोई प्रमाण नहीं है।" हमारा कहना है कि क्या आप लोगों के पास कोई प्रमाण है कि ये दशोरा प्रश्नोरा नागर नहीं है ? केवल भोजन व्यवहार व कन्या लेन–देन के बन्द हो जाने से किसी को भिन्न मान लेना ही पर्याप्त नहीं है। आज भिन्न हो गये, पहले नहीं थे।

11. जहाँ संस्कारों की भिन्नता का प्रश्न है तो आज बेटे के संस्कार भी अपने पिता से भिन्न हो जाते है तो क्या उसे अपने पिता की संतान होने से इन्कार किया जा सकता है ? दशोरों का लम्बे समय से इस जाति से अलग होने से संस्कारों में भिन्नता आना स्वभाविक है। किन्तु इनके सभी कर्म ब्राह्मणोचित ही है।

12. "इनका प्रश्नोरों के साथ कन्या लेन–देन व भोजन व्यवहार कब बन्द हुआ इसे ये नहीं बता सकें।" यह व्यवहार मन्दसोर आगमन के बाद ही बन्द हुआ तथा अपने ही वर्ग में यह चलता रहा। फिर मन्दसोर से विस्थापित होने के बाद ये 10 गोत्र के परिवार ही परस्पर कन्या लेन–देन करते रहे जिससे अन्य वर्गों से यह सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

13. श्री सवाई लाल गिरधर लाल पंड्या ने एक हास्यास्पद तर्क दिया कि "भट्ट विष्णु के पुत्र एकनाथ तक दशोरा नाम की अलग जाति नहीं थी।" किन्तु श्रीपंड्या को यह ज्ञात नहीं है कि भट्ट तो अवटंक है, गोत्र भार्गव है तथा जाति 'दशोरा' है। ये अवंटक, गोत्र व जाति का भेद ही नहीं कर पाये। मध्य प्रदेश के दशोरा आज भी जोशी, वैद्य, मिश्र आदि लिखते हैं इसी से ये दशोरा जाति के नही है ऐसा नहीं कहा जा सकता। मेवाड़ में भी पहले भट्ट व्यास, मिश्र, उपाध्याय आदि लिखने की प्रथा थी किन्तु इससे ये भिन्न जाति के नहीं हो जाते।

    श्री सवाई लाल गिरधर लाल पंड्या ने इस प्रशस्ति को पढ़ा ही नहीं। इसके अन्तिम श्लोक 75 के बाद स्पष्ट लिखा है–

    "श्री मद् दशपुर ज्ञाति भट्ट विष्णोस्तनूद्मव

    नाम्नैकनाथ नामायम लिखित्कृति मुज्वजाम।।"

    (संवत् 1485 वर्षे माघ विद 3)

14. उदयपुर राजमहल के केन्द्रीय कार्यालय से सन् 1990 ई. में एक केलेण्डर प्रकाशित हुआ है जिसमें 'मेवाड़' रत्न नाम से एकनाथ एवं महेश भट्ट का वर्णन हैं। इसमें एकनाथ के विषय में लिखा है–

    "यह महाराणा मोकल के शासन काल में हुए। जाति से दशोरा ब्राह्मण और भट्ट विष्णु के पुत्र थे। संस्कृत प्रशस्तियों के रचनाकार के रूप में इनकी ख्याति थी। चित्तौड़ स्थित समिद्धेश्वर के मंदिर की प्रशास्ति की रचना इन्होंने वि.सं. 1485 में की थी।"

15. फिर इनका कहना है कि "उत्तर हिन्द के प्रश्नोरा दशोरो की प्रश्नोरा नही मानते।" यह उनकी स्वयं की अनभिज्ञता ही है।

16. इनका एक तर्क यह भी है कि "हम तो अहिच्छत्र से आकर गुजरात में नागरों से मिल गये।" किन्तु यह दन्त कथा मात्र है। जिसको ये प्रामाणिक मान रहे हैं। स्कन्दपुराण नागर खंड में जो विवरण है इसे ये स्वीकार नहीं करते तो इनकी भूल है।

17. एक तर्क यह भी है कि "इनके गोत्र प्रश्नोरों व अन्य नागरों से भिन्न हैं।" गोत्रों का मिलना व अलग होना चलता ही रहता है। दशोरों ने अपने 10 ही गोत्रों में भोजन व्यवहार व कन्या लेन – देन जारी रखा व अन्यों से सम्बन्ध तोड़ दिया जिससे यह एक अलग जाति बन गई किन्तु इसी से यह नहीं कहा जा सकता कि इसका किसी मूल जाति से कोई सम्बन्ध रहा ही नहीं। इसकी मूल जाति "प्रश्नोरा नागर" ही थी। वर्तमान में चाहे इसका सम्बन्ध रहा हो अथवा नहीं इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। आज हम दशोरा जाति के हैं, प्रश्नोरा नहीं किन्तु पूर्व में प्रश्नोरा नागर थे। इस भेद को समझ लेना चाहिए।

18. गोत्रों व जातियों में तो परिवर्तन होता रहता है। किसी जाति के कुछ गोत्र वाले अन्य जाति में मिल जाते हैं जिससे उनकी गोत्र संख्या बढ़ जाती है तथा किसी जाति में गोत्र संख्या